

मीडिया में भारतीय त्योहारों का चित्रण**डॉ० प्रदीप कुमार¹ और डॉ० अमरदीप²**DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18497670>

Review: 04/02/2026

Acceptance: 04/02/2026

Publication: 10/02/2026

सारांश: त्योहार किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति के परिचायक होते हैं। त्योहार चाहे कोई भी हो वह मन में उमंग और उत्साह का संचार करता है। विशेष रूप से विविधताओं में एकता की प्रतीक भारतीय संस्कृति में तो त्योहारों की बात ही अलग है। भारत में जितने त्योहार मनाए जाते हैं शायद ही दुनिया के दूसरे किसी देश में इतने त्योहार मनाए जाते हों। हर त्योहार का अपना एक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व है। त्योहारों के जरिए समाज एवं संस्कृति प्रफुल्लित होते हैं और साम्प्रदायिक सद्भाव की भावना का भी विकास होता है। त्योहारों के मौके पर मेले लगते हैं, शोभा यात्राएं निकलती हैं तथा खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। जिस प्रकार भारत में त्योहारों की अपनी एक समृद्ध और विशाल परंपरा है ठीक उसी तरह यहां मीडिया का फलक भी उतना ही विस्तृत है। यही वजह है कि त्योहारों के मौके पर होने वाले विभिन्न आयोजनों को व्यापक मीडिया कवरेज भी मिलती है। जनसंचार के विभिन्न माध्यम इन त्योहारों के आयोजन को और शानदार बना देते हैं और विश्व के कोने-कोने में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया और यहां तक कि पारंपरिक माध्यमों के जरिए भी अलग-अलग धर्म-संप्रदायों के त्योहारों को व्यापक कवरेज मिलती है और इनका संदेश जन-जन तक पहुंचता है। विशेष रूप से सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव की वजह से भारतीय त्योहारों को वैश्विक पहचान मिली है और इसी वजह से केवल हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी भारतीय त्योहारों को धूमधाम से मनाया जाने लगा है। इस शोध पत्र के माध्यम से विभिन्न जनसंचार माध्यमों भारतीय त्योहारों के चित्रण की पड़ताल की गई है। साथ ही यह समझने का प्रयास भी किया गया है कि जनसंचार माध्यम किस प्रकार त्योहारों को सेलिब्रेट करने के वैज्ञानिक तरीके विकसित कर सकते हैं और इन्हें लोगों के बीच में लोकप्रिय भी बनाने का सामर्थ्य भी रखते हैं।

की वर्ड्स: जनसंचार माध्यम, भारतीय त्योहार, राष्ट्रीय एकता, संस्कृति ।

भूमिका: त्योहार किसी भी राष्ट्र के लोगों को एकता के सूत्र में पिरोने का काम करते हैं। विशेष रूप से भारत जैसे देश में जहां विभिन्न धर्म-संप्रदायों के लोग एक साथ रहते हैं वहां त्योहारों का महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस बैसाखी सभी त्योहार यहां पूरे उत्साह से मनाए जाते हैं। इन त्योहारों को

¹ सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चीका, कैथल, हरियाणा, भारत

² सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चीका, कैथल, हरियाणा, भारत

सभी धर्मों के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। एक-दूसरे के घर जाते हैं, बधाई देते हैं, मिठाई खिलाते हैं और साथ मिलकर उत्सव मनाते हैं। त्योहार के दिन सारे गिले-शिकवे दूर हो जाते हैं और एक सौहार्दपूर्ण माहौल में सभी एक साथ बैठकर त्योहार का आनंद उठाते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां लगभग हर महीने एक बड़ा त्योहार जरूर मनाया जाता है। इससे लोगों में उत्साह का संचार बना रहता है और वे आपस में संगठित भी रहते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिलती है और समाज भी प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

जनसंचार माध्यम त्योहारों के प्रचार-प्रसार एवं इन्हें लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के जरिए भारतीय त्योहारों को प्रमुखता से प्रकाशित एवं प्रसारित किया जाता है। समाचारपत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, धारावाहिक एवं सिनेमा के माध्यम से भारतीय त्योहारों के विभिन्न पक्षों पर बात होती है। यही वजह है कि जब भी कोई प्रमुख त्योहार होता है तो देश में एक सकारात्मक माहौल सा बन जाता है और उत्साह एवं ऊर्जा का प्रवाह होता है। समय के साथ-साथ त्योहारों को मनाने के तौर-तरीकों में भी बदलाव देखने को मिलता है और इन बदलावों को आमजन के बीच स्वीकृति दिलवाने में मीडिया की अहम भूमिका है।

भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार: भारत के विभिन्न हिस्सों में साल पर अलग-अलग त्योहार मनाए जाते हैं। होली, दशहरा, दीपावली, नवरात्र, दूर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, ईद-उल-फितर, श्री रामनवमी, श्रीकृष्ण जनमाष्टमी, पोंगल, ओणम, बैसाखी, बिहू, छठ पूजा, लोहड़ी, मकर संक्रांति और क्रिसमस समेत अनेक त्योहार देश भर में धूमधाम से मनाए जाते हैं। इन त्योहारों में सभी जाति-धर्मों के लोग शरीक होते हैं और इनके आयोजन में अनेकता में एकता की प्रतीक भारतीय संस्कृति की संपूर्ण झलक देखने को मिलती है।

विभिन्न जनसंचार माध्यमों में भारतीय त्योहारों का चित्रण

1. **समाचारपत्र** - विभिन्न समाचार-पत्रों में त्योहारों के मौके पर विशेष तौर पर साप्ताहिक परिशिष्ट प्रकाशित किए जाते हैं। इन परिशिष्टों में त्योहार के संबंध में विभिन्न पहलुओं पर रोचक सामग्री प्रस्तुत की जाती है। दीपावली के मौके प्रकाशित होने वाले परिशिष्टों में दीपावली पर्व के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पौराणिक महत्व पर चर्चा की जाती है। दीपावली की पूजन विधि, पूजा सामग्री, मुहूर्त, घर की साज-सजावट के संबंध में महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। ठीक इसी तरह होली के मौके पर भी स्पेशल फीचर प्रकाशित किए जाते हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में होली कैसे मनाई जाती है, होली के दिन रंगों का इस्तेमाल कैसे करें, त्वचा को हानिकारक रंगों से कैसे बचाएं, होली खेलते वक्त समझदारी से कैसे पानी का इस्तेमाल करने समेत तमाम जरूरी विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं। अंग्रेजी दैनिक समाचारपत्र द टाइम्स ऑफ इंडिया ने अपनी वेबसाइट पर रिलिजन और फेस्टिवल श्रेणी के लिए अलग से सेक्शन बनाया हुआ है। दैनिक भास्कर

के साप्ताहिक परिशिष्ट मधुरिमा में वर्ष भर में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों पर विशेष फीचर एवं उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाती है।

2. **पत्रिकाएं-** भारतीय त्योहारों के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का भी अहम योगदान है। त्योहारों के मौके पर पत्रिकाओं के विशेषांक छपते हैं। त्योहार विशेष के बारे में संपादकीय लिखे जाते हैं, साक्षात्कार प्रकाशित होते हैं और फीचर लिखे जाते हैं। दैनिक भास्कर समूह की हिन्दी पत्रिका अहा! ज़िंदगी के मार्च, 2025 के अंक में होली के त्योहार पर जहां रंग है वहां होली है शीर्षक से संपादकीय लिखा गया है। इसी अंक में बॉलीवुड फिल्मों में होली के त्योहार से संबंधित गीतों का जिक्र करते हुए शानदार फीचर भी लिखा गया है। इसी तरह बाकी त्योहारों के मौके पर भी पत्रिकाओं में काफी सामग्री प्रकाशित की जाती है जिससे समाज में एक सकारात्मक माहौल बनता है और लोगों में उमंग एवं उत्साह का संचार होता है। उदाहरण के तौर पर फेस्टिव नाम से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका में विभिन्न त्योहारों के बारे में विस्तार से खबरें, लेख, फीचर एवं दूसरी उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाती है।
3. **समाचार चैनल** - प्रिंट मीडिया की तरह समाचार चैनलों में भी त्योहारों के मौके पर विशेष कवरेज की जाती है। दशहरे के त्योहार के मौके पर रावण दहन का सभी प्रमुख चैनलों पर सीधा प्रसारण होता है और बुराई पर अच्छाई की जीत के संदेश को लोगों तक पहुंचाया जाता है। दशहरे के मौके पर विभिन्न मंचों की ओर से आयोजित की जाने वाली रामलीला में कई बॉलीवुड कलाकार एवं राजनेता हिस्सा लेते हैं और समाचार चैनलों पर इसको व्यापक कवरेज मिलती है। नवरात्र, दूर्गा पूजा, होली, दीपावली, पुरी की जगन्नाथ यात्रा और महाकुम्भ समेत सभी धार्मिक पर्व एवं त्योहारों के मौके पर कई दिनों तक मीडिया कवरेज की विशेष प्लानिंग की जाती है और न्यूज़ रिपोर्टर ग्रांड रिपोर्टिंग के जरिए लोगों को पूरी जानकारी देते हैं।
4. **टेलीविजन धारावाहिक-** समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं की ही तरह टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक भी भारतीय त्योहारों के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं। जब कोई प्रमुख त्योहार होता है तो इन सभी धारावाहिकों में विशेष एपिसोड तैयार किए जाते हैं। तारक मेहता का उल्टा चश्मा सिटकाँम सब टीवी पर कई वर्षों से सफलतापूर्वक चल रहा है और दर्शकों में काफी लोकप्रिय भी है। इस सिटकाँम यानी सिचुएशनल कामेडी शो में लगभग हर भारतीय त्योहार को धूमधाम से मनाया जाता है और कई अहम संदेश भी दिए जाते हैं। इसी तरह बाकी के धारावाहिकों में भी त्योहारों पर खास एपिसोड तैयार किए जाते हैं। यही वजह है कि समाज में भी इन त्योहारों को एक विशेष तरीके से मनाने का चलन बढ़ रहा है। उदाहरण के तौर पर करवा चैथ के मौके पर आम घरों में भी उसी तरीके से इस त्योहार को मनाया जाता है जैसे धारावाहिकों में होता है। कपड़ों के डिजाइन से लेकर, घर का इंटीरियर, रील्स बनाना ये सब वैसे ही

होता है जैसे सीरियल्स में हो रहा है। श्री कृष्ण लीला, जय हनुमान, देवों के देव महादेव समेत कई धारावाहिक तो ऐसे हैं जो विभिन्न देवी-देवताओं और पर्व एवं त्योहारों के संदर्भ में ही शुरू किए गए और बड़ी सफलतापूर्वक इनका संचालन भी हो रहा है। निश्चित रूप से ये धारावाहिक ऐसा करके भारतीय संस्कृति और त्योहारों के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

5. **सिनेमा** - सिनेमा जनसंचार का एक लोकप्रिय माध्यम है और इस माध्यम का लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव है। जैसा समाज में होता है वैसा फिल्मों में देखने को मिलता है और जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है वैसा बदलाव समाज में देखने को मिल जाता है। सिनेमा में संस्कृति के सभी रंग दिखाई देते हैं। विभिन्न पर्व और त्योहारों को भी फिल्मों में हमेशा विशेष स्थान मिलता आया है। कितनी ही ऐसी फिल्में हैं जिनमें गणेश चतुर्थी को बड़े भव्य अंदाज में फिल्माया जाता है और खास गाने और नृत्य प्रस्तुतियां तैयार की जाती हैं। होली के त्योहार को भी बहुत सी फिल्मों में शानदार तरीके से मनाते हुए दिखाया गया है और कई फिल्मी गीत भी होली के संदर्भ में लिखे गए हैं। बड़े परदे पर इन त्योहारों को बड़े भव्य अंदाज में दिखाया जाता है जिससे इन त्योहारों को मनाने के तौर-तरीके भी समय के साथ बदल रहे हैं।
6. **सोशल मीडिया**- वर्तमान दौर सोशल मीडिया का है। यूट्यूब, फेसबुक, एक्स समेत दूसरे तमाम सोशल मीडिया मंचों पर भारतीय त्योहारों के बारे में वीडियो और शॉर्ट्स पोस्ट किए जाते हैं। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में रह रहे भारतीय भी इन त्योहारों के सेलिब्रेशन की फोटो व वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करते हैं। इससे भारतीय त्योहारों को एक वैश्विक पहचान मिली है। सोशल मीडिया पर फोटो व वीडियो शेयर होने से बाकी लोगों में त्योहारों को लेकर जागरूकता पैदा होती है और वे अपने स्तर पर इन त्योहारों का शानदार आयोजन करते हैं। त्योहारों के मौके पर सोशल मीडिया पर आकर्षक ग्रीटिंग्स तैयार किए जाते हैं। एनिमेटेड कार्ड्स के जरिए एक-दूसरे को त्योहारों की बधाई दी जाती है। व्हाट्सएप के माध्यम से दोस्तों एवं रिश्तेदारों को बधाई संदेश प्रेषित किए जाते हैं। इन संदेशों को आप अपने तरीके से कस्टमाइज भी कर सकते हैं। एक-दूसरे को त्योहार के संदेश प्रेषित करने से परिवार एवं समाज में परस्पर सद्भाव की भावना का विकास होता है और इन संस्थाओं की जड़ें भी मजबूत होती हैं। त्योहार के दिन इंस्टाग्राम पर खूब रील्स शेयर की जाती हैं जिन्हें दुनियाभर में खूब व्यूज मिलते हैं। निःसंदेह सोशल मीडिया के मंच से त्योहारों के प्रचार-प्रसार में खूब मदद मिलती है और लोगों में इनके आयोजन का उत्साह बढ़ जाता है।
7. **लोक एवं परम्परागत माध्यम** - त्योहारों के प्रचार-प्रसार में जितना योगदान मुख्यधारा के मीडिया का है उतनी ही भूमिका लोक एवं परंपरागत माध्यमों की भी है। लोकगीतों, लोकनाट्य और लोक कथाओं में भारतीय पर्व एवं त्योहारों का विशेष उल्लेख है। जैसे होली के मौके पर महिलाएं त्योहार से कुछ दिन पहले

विभिन्न लोकगीतों पर नृत्य करती हैं। गेय शैली में प्रस्तुत की जाने वाली सांग विधा में भी कई त्योहारों के संदर्भ में प्रस्तुतियां दी जाती हैं।

भारतीय त्योहार और मीडिया के जनजागरूक अभियान: परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इसी के अनुरूप त्योहारों को सेलिब्रेट करने का तरीका भी बदलता जा रहा है। इसी वजह से कई त्योहार ऐसे भी हैं जिनका स्वरूप भी बदल चुका है। एक वक्त था जब दीपावली के मौके पर घरों की छत पर दीए जगमगाते थे और गांव-शहर रोशन हो जाते थे। परिवेश ऐसा बन जाता था कि मन प्रफुल्लित हो उठता। लेकिन अब दीपावली के मौके पर दीयों की जगह रंग-बिरंगी लाइटों एवं पटाखों ने ले ली है। दीयों की जगमग रोशनी पटाखों के शोर-गुल और धंुए के गुब्बार में कहीं खो सी जाती है। इससे पर्यावरण का नुकसान तो होता ही आमजन, विशेष रूप से बुजुर्गों एवं बच्चों को दिक्कतें पेश आती हैं। हालांकि प्रशासन की तरफ से पटाखों पर उचित प्रतिबंध भी लगाए जाते हैं, लेकिन जब तक आम जनमानस इस जागरूकता अभियान में शरीक नहीं होगा तब तक इस समस्या का समाधान असंभव है। ऐसे में मीडिया की भूमिका काफी अहम हो जाती है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के जरिए इस संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण विषय पर विशेष जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।



Courtesy - The Times of India, Festive

भारकर खास ओडिशा का तीसरा सबसे बड़ा उत्सव डोला पूर्णिमा कल पुरी की होली; प्रभु जगन्नाथ राजराजेश्वरी रूप में दर्शन देंगे, इन पर गुलाल डालने से शुरू होता है रंगोत्सव

प्रियंका साहू | पुरी

ओडिशा के पुरी में हर साल हो
वाली महाप्रभु जगन्नाथ की रथ
यात्रा स्थितिगत है, लेकिन, यहाँ ए
और विधान है, जिसमें दुनियाभर
लोग आते हैं। यह है डोल पुर्णि
पर भगवान के स्वर्ण रथ के दर्शन
का पर्व, जो हर साल फाल्गुन मा
में पुर्णिमा तिथि पर होता है। इस व
यह 14 मार्च को है। इस दिन भगव
नथ-कुंडल समेत 30 से 40 प्रक
के स्वर्णाभूषण पहनकर दर्शन
करते हैं। यह प्रभु का राजतोषण
स्वरूप कहलाता है। भक्ता भगव
के दर्शन करते हैं, उन पर मुखा
छिड़कते हैं। फिर पुरी में होली दु



शुरू होता है। जगन्नाथ

वीरछंद सेवायत डॉ. शरत भास्कर को बतलाना कि पुरी महत्त्व रखे यात्रा और देवस है, उतना ही डोल पूर्णिमा का यह परंपरा 500 साल से है। वैसे डोल पूर्णिमा का प

तड़के 3 बजे खुलेगा जगन्नाथ मंदिर, सुबह 8 बजे से स्वर्ण दर्शन

[illegible]

दैनिक भास्कर 'मिड्टी के गणेश, घर में ही विसर्जन' अभियान को सात सालों से लगातार सफल बनाते आ रहे करोड़ों पाठक परिवारों का आभार। विश्वास है हम आगे भी हमेशा इस परम्परा को आत्मसात करते रहेंगे और मिड्टी के गणेश की स्थापना एवं घर में ही उनका विसर्जन करेंगे। उस पवित्र मिड्टी में एक पौधा लगाने से हमें और आने वाली पीढ़ियों को आँखोंजान के रूप में साँसे मिलती रहेंगी।

**Courtesy - Dainik
Bhaskar Group**



Courtesy - Big FM

इस बार होली खेलना समाज की दृष्टि में अपराध है.

अब ओ... सिर्फ **तिलक होली**

आपको मालूम होना चाहिए कि-

- आप जल-आपातकाल के दौर में हैं और पानी की बचत आपका सामाजिक दायित्व है.
- नल से टपकती एक-एक बूँद 24 घंटों में लगभग 200 लीटर से भी ज्यादा पानी बहा देती है.
- प्रशासन जो पानी आपको नलों के द्वारा देता है उसकी शुद्धता के लिये अनेक प्रक्रियाएं होती हैं परन्तु टैंकर से मिले पानी के स्रोत अस्वास्थ्यकर स्थान से भी हो सकते हैं, इसलिये अच्छे पानी को सहेजना ज्यादा समझदारी है.
- अशुद्ध पानी से हेपेटाइटिस (ए.बी एवं सी), कॉलरा, फाइलेरिया एवं डायरिया फैलता है.

तथ्य जो आपको खानना चाहिये-

- पिने का पानी हम सब 12 घं. लीटर में खरीद कर पी रहे हैं.
- अपने घर, रास्ते और शहर में जगह-जगह पानी के बिले बरसि लेकर लीक्रे जोग कोई अलग नहीं हैं. हम भी कल इन्ही रूप में पानी की हवाला में घटने.

दैनिक भास्कर जल सत्याग्रह

आपकी 'नई सोच' की आवाज

दैनिक भास्कर

दैनिक भास्कर अभियान

मिट्टी के गणेश घर में ही विसर्जन

Courtesy - Dainik Bhaskar Group

ठीक इसी तरह होली के मौके पर जल संरक्षण को लेकर विशेष अभियान चलाया जा सकता है। राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचारपत्र दैनिक भास्कर की ओर से इस संदर्भ में तिलक होली नाम से जागरूकता अभियान का सफल संचालन किया गया। इस अभियान का संदेश यही है कि हमें सूखे रंगों से एक-दूसरे को तिलक लगाकर होली का उत्सव मनाना चाहिए और भावी पीढ़ी को एक सुनहरा भविष्य देने के लिए पानी का दुरुपयोग करने से बचना चाहिए। ठीक इसी तरह दैनिक भास्कर की ओर से गणेश चतुर्थी के मौके पर किए जाने वाले गणपति विसर्जन के संदर्भ में भी विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान को दैनिक भास्कर ने मिट्टी के गणेश अभियान का नाम दिया। मिट्टी के गणेश अभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उठाया एक अनूठा कदम था जिसे लोगों की काफी सराहना मिली। दरअसल त्योहारों को मनाने का असली उद्देश्य लोगों में उत्साह एवं उमंग का संचार करना एवं समाज में परस्पर सौहार्द कायम करते हुए एक खुशहाल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना है। पर्यावरण संरक्षण एवं जल संरक्षण को सर्वोपरि रखते हुए त्योहारों को मनाने से हम इस स्वप्न को साकार कर सकते हैं। बिग एफएम की ओर से लोहड़ी के त्योहार के मौके पर कुड़ियों दी लोहड़ी अभियान सफलतापूर्वक चलाया गया। बिग एफएम के इस अभियान के अंतर्गत लड़कियों की एक टोली उन सभी घरों में उपहार लेकर पहुंची जहां छोटी बच्ची की पहली लोहड़ी सेलिब्रेट की जानी है। अभियान का उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करना, महिला सशक्तिकरण एवं समाज में लड़कियों के प्रति सोच बदलना है।

उपर्युक्त पहलुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा करने के बाद हम कह सकते हैं कि भारतीय त्योहारों को मीडिया के जरिए व्यापक प्रचार एवं प्रसार मिल रहा है। विभिन्न जनसंचार माध्यमों ने न केवल भारतीय त्योहारों को वैश्विक पहचान दी है बल्कि पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर चलाए गए जनजागरूक अभियानों के जरिए भारतीय त्योहारों को मनाने की प्रासंगिकता एवं सार्थकता को भी सिद्ध किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची: -

- <https://www.thetimes.com>
- <https://www.festivalsfromindia.com/>
- <https://www.bhaskar.com/>
- <https://www.nationalheraldindia.com/entertainment/kudiyar-di-lohri-big-fms-unique-initiative-to-make-first-lohri-of-girl-child-a-special-one>
- <https://www.indiantravelstore.com/blog/famous-festivals-of-india>